DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
सन्धि
Part -6
LIVE 23-03-2024 05:00 PM

पररूपविधायकं विधिसूत्रम्

ओमाङोश्च ६।१।९५ ॥

अवर्णात् परे + ओम् आङ्

ओमि आङि चात्परे पररूपमेकादेशः स्यात् ।

शिवाय नमः । शिव एहि ।

शिवाय ओम् नमः

अ ओ

शिवाय् ओम् नमः

शिवायों नमः

शिव एहि हलन्त्यम्

आङ् + इहि

आ + इहि

शिव् आ + इहि

शिवा + इहि = शिवेहि

एङि पररूपम्

ए/ओ

अवर्णान्त उपसर्ग + एङ् धातु = पररूप

उप + ओषति = उपोषति

प्र + एषयति = प्रेषयति

अ

कर्क + अन्धु = कर्कन्धु

अ

मार्त + अण्ड = मार्तण्ड

अस्

मनस् + ईषा = मनीषा

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

ओमाङोश्च । ओम् च आङ् च ओमाङौ तयोः- ओमाङोः (इतरेतरयोगद्वन्द्वः) । ओमाङोः सप्तम्यन्तं, च अव्ययपदं, द्विपदमिदं सूत्रम् ।

इस सूत्र में आद्गुणः आद्गुणः से आत् और एङि पररूपम् से पररूपम् की अनुवृत्ति आ रही है। एकः पूर्वपर्योः का अधिकार भी है।

अवर्ण + ओम् / आङ् = पररूप

शिवाय + ओम्

अतिदेशसूत्रम्

अन्त आदिवत् च

अन्तादिवच्च ६।१।८५ ॥

योऽयमेकादेशः स पूर्वस्यान्तवत् परस्यादिवत् । शिवेहि ।

अन्तादिवच्च । अन्तश्च आदिश्च - अन्तादी (द्वन्द्वः), अन्तादिभ्यां तुल्यम्=अन्तादिवत्। अन्तादिवत् अव्ययपदं च अव्ययपदं द्विपदमिदं सूत्रम् ।

पूर्व और पर के स्थान पर जो एकादेश होता है, वह पूर्ववर्ती वर्णसमुदाय के लिए उसके अन्त्य के समान होता हैं और परवर्ती वर्णसमुदाय के लिए उसी के आदि के समान होता हैं।

- इस सूत्र को अतिदेश सूत्र कहते हैं क्योंकि जो वैसा नहीं है उसको वैसा मान लेना ही अतिदेश है।

शिव + एहि

↓

आइ + इहि

शिव एहि = शिवेहि

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

सवर्णदीर्घविधायकं विधिसूत्रम्

अकः सवर्णे दीर्घः ६ |१| १०१ ||

अकः सवर्णेऽचि परे पूर्वपरयोर्दीर्घ एकादेशः स्यात् ।

दैत्यारिः। श्रीशः। विष्णूदयः । होतृकारः ।

अ इ उ ऋ ऌ + अ इ उ ऋ ऌ = आ ई ऊ ॠ

दैत्य + आरिः = दैत्य आ रि

अ अ → आ

दैत्यारिः

श्रीशः

श्री + ईशः = श्रीशः

हरि + ईशः = हरीशः

गौरी + इन्द्र = गौरीन्द्र

विष्णूदयः

विष्णु + उदयः =

लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

धातु + ऊष्मा = धातूष्मा

वधू + उत्सव = वधूत्सवं

होतृकारः

होतृ + ऋकारः =

परनित्यान्तरङ्गापवादानामुत्तरोत्तरं बलीयः ।

यह परिभाषा है। सूत्रों में पूर्वसूत्र की अपेक्षा परसूत्र बलवान् होता है । पूर्वसूत्र और परसूत्र की अपेक्षा नित्यसूत्र बलवान् होता है, पूर्व, पर, नित्यसूत्रों की अपेक्षा अन्तरङ्गसूत्र बलवान् होता है और पूर्व, पर, नित्य, अन्तरङ्गसूत्रों की अपेक्षा अपवादसूत्र बलवान् होता है।

अर्थात् पूर्व, पर, नित्य, अन्तरङ्ग और अपवाद इन सूत्रों में पूर्व पूर्व की अपेक्षा उत्तर-उत्तर के बलवान होते हैं। जो सूत्र अपेक्षाकृत बलवान् होता है, वह पहले प्रवृत्त होता है। पूर्व और पर का व्यवहार इस तरह से समझें- अष्टाध्यायी के क्रम से जो पहले पठित है वह पूर्वसूत्र और तदपेक्षया जो बाद में पठित है वह उत्तरसूत्र है।

कृताकृतप्रसङ्गी नित्यः किसी सूत्र के लगने के पूर्व भी वह सूत्र लग सकता है और उस सूत्र के लगने के बाद भी लग सकता है अर्थात् पूर्वस्थिति में भी लगने की क्षमता रखता है और परस्थिति में भी लगने की क्षमता रखता है। अतः उसे नित्य कहते हैं।

अन्तरङ्ग को जानने के लिए अनेक नियम हैं। जैसे कि धातूपसर्गयोः कार्यमन्तरङ्गम्, अन्यत्कार्यं बहिरङ्गम्। अल्पापेक्षमन्तरङ्गम्। पूर्वोपस्थितिनिमित्तकमन्तरङ्गम् आदि आदि। अर्थात् धातु और उपसर्ग के बीच में होने वाला कार्य अन्तरंग होता है। कम अपेक्षा करने वाला कार्य अन्तरंग होता है। आगे की अपेक्षा पहले के वर्णों के विषय में होने वाला कार्य अन्तरंग होता है, आदि आदि।

अपवाद निरवकाशो विधिरपवादः ।

ज्यादा जगहों पर लगने वाले सूत्रों की अपेक्षा कम जगह पर लगने वाला निरवकाश सूत्र अपवाद सूत्र कहलाता है। जैसे कि आद्गुणः और वृद्धिरेचि में आद्गुणः अधिक जगहों पर लगता है और वृद्धिरेचि कम जगहों पर लगता है। अतः वृद्धिरेचि यह सूत्र आद्गुणः की अपेक्षा निरवकाश है, अतः यह अपवादसूत्र है।

सवर्णदीर्घविधायकं विधिसूत्रम्

अकः सवर्णे दीर्घः ६ | १|१०१ ॥

अकः सवर्णेऽचि परे पूर्वपरयोर्दीर्घ एकादेशः स्यात् ।

दैत्यारिः। श्रीशः। विष्णूदयः । होतृकारः ।

अकः सवर्णे दीर्घः । अकः प्रथमान्तं सवर्णे सप्तम्यन्तं दीर्घः प्रथमान्तं, त्रिपदमिदं सूत्रम्। इको यणचि से अचि की अनुवृत्ति और एकः पूर्वपरयोः का अधिकार है। अक् से सवर्ण अच् के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर दीर्घसंज्ञक एकादेश होता है।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

पूर्वरूपविधायकं विधिसूत्रम्

एङः पदान्तादति ६ । १।१०९ ॥

पदान्तादेङनेऽति परे पूर्वरूपमेकादेशः स्यात् ।

हरेऽव । विष्णोऽव ।

एङः पदान्तादति । एङः पञ्चम्यन्तं पदान्तात् पञ्चम्यन्तम्, अति सप्तम्यन्तं, त्रिपदमिदं सूत्रम् । अमि पूर्वः से पूर्व की अनुवृत्ति आती है। एकः पूर्वपरयोः का अधिकार है।

पदान्त एङ् से ह्रस्व अकार के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एक आदेश होता है।

- यण्
- अयादि
- गुण
- वृद्धि
- पररूप

दीर्घ

पूर्वरूप

जैसे एङि पररूपम् यह सूत्र पररूप करता है उसी प्रकार एङः पदान्तादति यह सूत्र पूर्वरूप करता है । पररूप में पूर्व और पर के स्थान पर परवर्णसदृश वर्ण हो जाता है और इसके विपरीत पूर्वरूप में पूर्व और परवर्ण के स्थान पर पूर्ववर्णसदृश वर्ण होता है। दोनों में पूर्व और पर के स्थान पर एकादेश ही होता है।

हरे + अव = हरेऽव

विष्णो + अव = विष्णोऽव

ते + अपि = तेऽपि

लोको + अस्मिन् = लोकोऽस्मिन्

प्रकृतिभावविधायकं विधिसूत्रम्

सर्वत्र विभाषा गोः ६ । १ । १२२ ॥

लोके वेदे चैङन्तस्य गोरति वा प्रकृतिभावः पदान्ते ।

गोअग्रम्। गोऽग्रम्। एङन्तस्य किम्? चित्रग्वग्रम्। पदान्ते किम्? गोः।

सर्वत्र विभाषा गोः । सर्वत्र त्रल्प्रत्ययान्तम् अव्ययं विभाषा प्रथमान्तं, गोः षठ्यन्तं, त्रिपदमिदं सूत्रम् । इस सूत्र में एङः पदान्तादति से पदान्तात् को सप्तमी विभक्ति में विपरिणाम करके पदान्ते तथा एङः एवं अति की और प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे से प्रकृत्या की अनुवृत्ति आती है। लौकिक एवं वैदिक प्रयोगों में एङन्त गो शब्द को विकल्प से प्रकृतिभाव होता है पदान्त में।

गो + अग्रम्

ओ + ह्रस्व अ = गोऽग्रम

गोअग्रम